ISSN: 2347-2723 IMPACT FACTOR : 3.3754(UIF) VOLUME - 5 | ISSUE - 1 | AUGUST - 2017

REVIEW OF LITERATURE

अध्यापकों की बाल अधिकारों से सम्बन्धित तत्परता का अध्ययन

डॉ जयंत पाल सिंह[1] , डॉ. शिरीष पाल सिंह[2]
[1]टी.जी.टी सर्वोदय बाल विद्यालय , सी ब्लॉक दिलसाद गार्डन दिल्ली.
[2](पत्राचार लेखक) सह प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय , (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)वर्धा (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :

बच्चे गतिमान, सजीव, वृद्धिमान, विकासमान, परिपक्वोन्मुख व्यक्तित्व हैं। बच्चा स्वयमेव पूर्ण व्यक्तित्व है। उस की अपनी आवश्यकताएं, आकांक्षाएं, पसंदगियां नापसंदगियां होती हैं। बच्चे को अचेतन, अर्द्धचेतन, आवश्यकताएं तथा इच्छाएं, उसका परिवेश तथा आनुवंशिकता प्रभावित करती हैं। बच्चे को समझना उसे जानना यद्यपि सरल कार्य नहीं है। परन्तु अध्यापकों को उसे समझना आवश्यक है। राष्ट्रीय तथा वैश्विक स्तर पर बच्चों के संतुलित तथा समग्र विकास के लिए, उन्हें कुछ अधिकार प्रदान किए गए हैं। उन अधिकारों को बच्चों को उपलब्ध कराना परिवार तथा समाज का दायित्व है। समाज ने बालकों के विकास का सम्पूर्ण दायित्व अध्यापकों को सौंपा हुआ है इस कारण बच्चों के विकास की सम्पूर्ण जिम्मेदारी अध्यापकों पर है। अध्यापक बच्चों के विकास के लिए एक तरह से सम्पूर्ण जिम्मेदार नहीं है तो महत्वपूर्ण जिम्मेदार अवश्य हैं। बच्चों के समग्र विकास के लिए अवसर प्रदान करना अभी भी एक चुनौती बनी हुई है। परन्तु सामूहिक प्रयास तथा सभी क्षेत्रों की समेकित कार्यवाही से इसे यथार्थ में बदला जा सकता है। समेकित प्रयास में सरकार के विभिन्न विभागों, माता–पिता तथा अध्यापकों का महत्वपूर्ण योगदान रहना आवश्यक है।

1 शिक्षा सम्बन्धी कथनों पर अध्यापकों की तत्परता:

पहले हम कथन 6 पर अध्यापकों की तत्परता का विश्लेषण कर रहे हैं। कथन 6 है –

6 हमारे देश के कितने बच्चे विद्यालय नहीं जा पातें:

1	1.34 करोड़
2	1.24 करोड़
3	1.44 करोड़

इस प्रश्न पर अध्यापकों की तत्परता को सारणी 1 में प्रस्तुत किया गया हैं।

सारणी 1
विद्यालय न जाने वाले बच्चों की संख्या के बारे में अध्यापकों के द्वारा दिए गये विकल्पों पर प्रतिशत संख्या तथा विभिन्न वर्गों में पारस्परिक काई वर्ग मूल्य

कथन संख्या	अध्यापकों के वर्ग	विकल्पों के प्रत्यूत्तरों की प्रतिशत			काई वर्ग	डीएफ	सार्थकता
		1	2	3			
6	पुरुष	41.2	37.4	21.4	21.854	2	0.001 सा.
	महिला	12.3	12.3	12.3			
	ग्रामीण	39.1	37.4	23.6	5.796	2	0.05 सा.
	शहरी	49.7	32.9	17.4			
	सामान्य	48.3	34.7	17.0	4.529	2	सा0 नं0
	ओबीसी	45.3	36.8	17.9			

	एससीएसटी	42.8	31.9	25.3			
	समस्त	46.2	34.4	19.4	55.580	2	0.000

इस कथन के सम्बन्ध में भारत की जनगणना 2001 के आधार पर हमारे देश के 1.34 करोड़ बच्चें विद्यालय नहीं जा पाते । इस तथ्य के आधार पर कथन संख्या 6 का पहला प्रत्युत्तर सही हैं। इस प्रकार महिला एवं पुरुषों आवृत्तियों की प्रतिशत का काईवर्ग 0.001 स्तर पर सार्थक है।समग्र अध्यापकों में से स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या का सही अनुमान लगाने वाले अध्यापक 46.2 प्रतिशत है 63.3 प्रतिशत महिलाओं की तुलना में 41.2 प्रतिशत अध्यापकों का अनुमान ठीक है। शहरी अध्यापक ग्रामीण अध्यापकों की अपेक्षा यह जानकारी अच्छी रखते हैं तथा सामान्य अध्यापक आरक्षित वर्ग की अपेक्षा अधिक सही जानकारी रखते हैं।

2 बच्चों का परीक्षा में फेल होने का कारण :

हमारे उपकरण में बच्चों के फेल होने के कारण के सम्बन्ध में अध्यापकों के अभिमतों को जानने के लिए तत्परता खण्ड (ख) में क्रमांक 12 पर एक कथन रखा गया हैं। कथन इस प्रकार हैं।

12 बच्चों का परीक्षा में फेल होने के कारण :

1.	माता पिता की बच्चों के प्रति उदासीनता ।
2.	विद्यालयों का अपने दायित्व को पूरा न करना।
3.	बच्चों का बौद्धिक स्तर कम होना।

इस कथन पर अध्यापकों के प्रत्यूत्तरों को सारणी 4.5.2 (क) में प्रस्तुत किया गया हैं।

सारणी 2 (क)
बच्चों के फेल होने के कारणों पर अध्यापकों के प्रत्यूत्तर

कथन संख्या	अध्यापकों के वर्ग	विकल्पों में प्रत्यूत्तरों का प्रतिशत			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी. एफ	सार्थकता
6	पुरुष	58.5	24.1	17.3	13.160	2	0.001 सा0
	महिला	39.8	30.6	29.6			
	ग्रामीण	63.2	19.0	17.8	8.954	2	0.012 सा.
	शहरी	50.9	28.6	20.5			
	सामान्य	58.1	21.5	20.4	13.99	4	0.001 सा.
	ओ.बी.सी	43.6	38.5	17.9			
	एससीएसटी	58.7	21.7	19.6			
	समस्त	55.0	25.4	19.6	117.591	2	0.000

निर्वचन – सारणी 2 (क) का विश्लेषण इस प्रकार है –

समग्र अध्यापकों में से 55 प्रतिशत बच्चों के फेल होने का कारण माता पिता की बच्चों के प्रति उदासीनता को मानते हैं। बच्चों का बौद्धिक स्तर कम होना, फेल होने का कारण मानने वाले अध्यापक 19.6 प्रतिशत हैं। विद्यालय का अपने दायित्व को पूरा न कर पाना फेल होने का कारण समग्र अध्यापकों का 25.4 प्रतिशत मान रहे हैं। इनमें न्यूनतम प्रतिशत ग्रामीण अध्यापक का 19.0 प्रतिशत हैं। माता पिता की बच्चों के प्रति उदासीनता को अधिकांश अध्यापक फेल होने का कारण मान रहे हैं जबकि दूसरे क्रम पर बच्चों का बौद्धिक स्तर कम होना मान रहे हैं।

2 (ख) राजकीय विद्यालयों का बोर्ड का परीक्षा परिणाम कम होने का कारण :

आमतौर पर राजकीय विद्यालयों पर बोर्ड परीक्षा परिणाम की तुलना अराजकीय विद्यालयों से की जाती रही हैं। विशेष रूप से उच्च फीस वाले विद्यालयों से। यह तुलना करना सरकार के दृष्टिकोण से इसलिए भी आवश्यक हो जाता हैं क्योंकि अध्यापकों के वेतन भत्तें आदि पब्लिक स्कूल के अध्यापकों से अधिक ही होते हैं। आज कल अध्यापकों के चयन में भी परिवर्तन आने का कारण उच्च शैक्षिक योग्यताओं वाले अध्यापकों का ही चयन राजकीय विद्यालयों में हो पाता है। कुछ अति उच्च स्तर के पब्लिक स्कूलों को यदि छोड़ दिया जाए तो यह वेतन आदि की स्थिति सत्य ही है। हमारे उपकरण में इस प्रकरण पर जो कथन दिया गया है वह कथन तथा उनके प्रत्यूत्तर श्रेणियाँ इस प्रकार हैं।

13 प्रायः राजकीय विद्यालयों का बोर्ड का परीक्षा परिणाम कम रहता है। उसका कारण होता हैं।

1.	जन सामान्य के बच्चों को प्रवेश लेने की सुविधा।
2.	विद्यालय में प्रशिक्षण सामग्री का अभाव।
3.	अध्यापकों की उदासीनता।

सारणी .2 (ख) का अवलोकन करने पर प्रकट होने वाले तथ्य इस प्रकार हैं – ैराजकीय विद्यालयों में जन सामान्य के बच्चे प्रवेश लेते है। राजकीय विद्यालय आमतौर पर सर्वजनहिताय है। इस कारण सभी बच्चों को प्रवेश देना इन विद्यालयों का दायित्व है। समस्त अध्यापक प्रत्यूत्तर श्रेणी एक पर 41.3 प्रतिशत अपनी सम्मति व्यक्त कर रहे है। यहां सर्वाधिक प्रतिशत सामान्य वर्ग के अध्यपकों की है। और सबसे कम प्रतिशत महिला अध्यापकों की है। दूसरे विकल्प में अध्यापकों की प्रशिक्षण सामग्रियों के अभाव पर सर्वाधिक प्रतिशत महिला अध्यापकों की 67.3 है तथा न्यूनतम ग्रामीण अध्यापकों की 38.5 हैं। तीसरे विकल्प में अध्यापकों की उदासीनता को सर्वोच्च प्रतिशत में ग्रामीण अध्यापक मान रहे हैं जिनकी प्रतिशत 8.1 है तथा न्यूनतम प्रतिशत 6.2 महिला अध्यापकों की हैं।

सारणी.2 (ख)
राजकीय विद्यालयों में बोर्ड का परीक्षा परिणाम कम रहने के कारणों पर अध्यापकों के प्रत्यूत्तर।

कथन संख्या	अध्यापकों के वर्ग	विकल्पों के प्रत्यूत्तरों की प्रतिशत			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी. एफ	सार्थकता
13	पुरुष	44.8	47.6	7.6	12.664	2	0.002 सा.
	महिला	26.5	67.3	6.2			
	ग्रामीण	53.4	38.5	8.1	17.855	2	0.001 सा.
	शहरी	35.3	57.0	7.7			
	सामान्य	46.0	46.0	8.0	6.699	4	0.15 सा.
	ओबीसी	37.6	54.7	7.7			
	एससीएसटी	35.5	58.7	5.8			
	समस्त	41.3	51.3	7.4	166.239	2	0.000

राजकीय विद्यालयों का परीक्षा परिणाम कम रहने का कारण जन सामान्य के बालकों को प्रवेश लेने की सुविधा को 41.3 प्रतिशत मानते है जबकि विद्यालयों में प्रशिक्षण सामग्री के अभाव को कारण मानने वाले अध्यापकों की प्रतिशत 51.3 है जबकि अध्यापकों की उदासीनता को कम परीक्षा परिणाम कारण केवल 7.4 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं।

3 पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के सम्बन्ध में अध्यापकों की तत्परता का अध्ययन

पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के सम्बन्ध में अध्यापकों की तत्परता का अध्ययन करने के लिए हमारे उपकरण में कथन 11, 14, 15 तथा 19 प्रस्तुत किए हैं। इन कथनों के प्रत्यूत्तरों को क्रमशः आगे प्रस्तुत किया जा रहा हैं। पहले हम ग्रीष्मावकाश के दौरान आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम के सम्बन्ध में अवलोकन कर रहे हैं। इन सम्बन्ध में हमारे उपकरण में क्रमांक 11 पर प्रस्तुत किया गया कथन इस प्रकार हैं–

11 ग्रीष्मावकाश में बच्चों के सामाजिक, सांस्कृतिक, शारीरिक, कला, संगीत, नृत्य, आदि का प्रशिक्षण देने के लिए जो कार्यक्रम चलाये जाते हैं– :

1.	ये कार्यक्रम बच्चों के लिए उपयोगी रहते हैं।	
2.	इनमें व्यर्थ ही समय नष्ट होता है।	
3.	ये केवल पैसे वाले परिवारों के लिए अच्छे रहते हैं।	

इस कथन पर अध्यापकों के प्रत्यूत्तरों को सारणी 3 (क) में प्रस्तुत किया गया हैं।

सारणी 3 (क)
ग्रीष्मावकाश में बच्चों के लिए चलाये जाने वाले सांस्कृतिक, शारीरिक, कला, संगीत, नृत्य, आदि का प्रशिक्षण देने के लिए कार्यक्रमों पर अध्यापकों की तत्परता

कथन संख्या	अध्यापकों के वर्ग	विकल्पों के प्रत्यूत्तरों की प्रतिशत			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी. एफ	सार्थकता
11	पुरुष	86.9	10.7	2.4	6.697	2	0.035 सा0
	महिला	95.9	4.1	0			
	ग्रामीण	89.1	8.0	2.9	1.760	2	0.145 सा0 न0
	शहरी	88.4	10.1	1.4			
	सामान्य	86.0	11.3	2.6	4.592	4	0.415 सा0 न0
	ओबीसी	89.7	8.5	1.7			
	एससीएसटी	91.8	6.5	1.7			
	समस्त	88.7	9.4	1.9	726.034	2	.000

समग्र अध्यापकों के उत्तरों से विदित होता है कि इन 88.7 प्रतिशत अध्यापक इन कार्यक्रमों को उपयोगी समझते है । एससीएसटी तथा महिला अध्यापकों में यह प्रतिशत 91.8 तथा 95.9 है। सामान्य वर्ग के अध्यापक 86.0 प्रतिशत तथा पुरुष अध्यापक 86.9 प्रतिशत इन कार्यक्रमों को उपयोगी मान रहे है।अध्यापकों के 88.1 प्रतिशत अध्यापक ग्रीष्मावकाश में बच्चों के सामाजिक, सांस्कृतिक, शारीरिक, कला, संगीत, नृत्य, आदि का प्रशिक्षण दिया जाना उपयोगी मानते हैं। महिला, पुरुषों की अपेक्षा अधिक विधायकता प्रदर्शित कर रही हैं।

3 (ख) योग तथा शारीरिक शिक्षा के सम्बन्ध में अध्यापकों की तत्परताः

विद्यालय के योग तथा शारीरिक शिक्षा के सम्बन्ध में जो कथन अध्यापकों की तत्परता को जानने के लिए किया गया है वह हैं –

14 विद्यालय के योग तथा शारीरिक शिक्षा के कार्यों में सहयोग देने के लिए आपसे कहा जाए तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी :

	यह तो सम्बन्धित अध्यापकों का काम है। फिर वे क्या करेंगे। उन्हें ही अपना काम करना चाहिए।	
	योग देने में खुशी महसूस करेंगे।	
	सब बेकार फण्डे है असली काम तो पढ़ाना हैं।	

इस कथन पर अध्यापकों के प्रत्यूत्तरों को सारणी 3 (ख) में प्रस्तुत किया गया हैं।

सारणी 3 (ख)
योग और शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रमों में सहयोग देने के प्रति अध्यापकों के प्रत्यूत्तर

कथन संख्या	वर्ग	प्रत्यूत्तर श्रेणियों पर प्रतिशत उत्तर			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी. एफ	सार्थकता
14	पुरुष	14.2	83.9	1.9	2.604	0	0.272 सा0 नं0
	महिला	11.2	88.8	0			
	ग्रामीण	13.2	85.6	1.1	0.315	2	0.849 सा0 नं0
	शहरी	13.9	84.4	1.7			
	सामान्य	13.6	84.1	2.3	4.237	4	0.375 सा0 नं0
	ओबीसी	11.1	87.2	1.7			
	एससीएसटी	14.4	84.1	1.5			
	समस्त	13.7	84.8	1.5	642.182	2	.000

निर्वचन : सारणी 4.5.3 (ख) का अवलोकन करने पर प्रकट होने वाले तथ्य इस प्रकार हैं –
समस्त अध्यापकों में से 84.8 प्रतिशत इन कार्यक्रमों में सहयोग देने में प्रसन्नता महसूस करेंगे, ऐसा मानते है। विभिन्न वर्गों में से महिला वर्ग व ओबीसी की इस सम्बन्ध में प्रतिशत क्रमशः 88.8 तथा 87.2 । पुरुष वर्ग की प्रतिशत अन्य वर्गों से कम हैं। अध्यापक अतिउच्च प्रतिशत में 85 प्रतिशत शारीरिक शिक्षा तथा योग शिक्षा के कार्यक्रमों में सहर्ष सहयोग देना चाहते हैं।

3 (ग) शैक्षिक भ्रमण के सम्बन्ध में अध्यापकों की तत्परताः

शैक्षिक भ्रमण के लिए जो कथन किया गया है वह हैं–

15 विद्यालय की ओर से शैक्षिक–भ्रमण ले जाना :

	में बहुत रिस्क रहता हैं।
	ों का ज्ञान तथा आत्मविश्वास बढ़ता हैं।
	र काम है। फिजूलखर्ची है।

इस कथन पर अध्यापकों के उत्तरों को सारणी 3 (ग) में प्रस्तुत किया गया हैं।

सारणी 3 (ग)
सारणी 3 (ग) शैक्षिक भ्रमण सम्बन्धी कथन पर अध्यापकों की तत्परता

कथन संख्या	वर्ग	प्रत्यूत्तर श्रेणियों पर प्रतिशत उत्तर			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी. एफ	सार्थकता
	पुरुष	13.0	84.4	2.6	2.666	2	0.264 सा0 न0
	महिला	14.3	85.7	0			
	ग्रामीण	16.1	81.6	2.3	18.9	2	0.388 सा0 न0
	शहरी	11.8	86.1	2.0			
	सामान्य	13.5	84.2	2.3	7.342	4	0.119 सा0 न0
	ओबीसी	11.1	87.2	1.7			
	एससीएसटी	15.9	84.1	0.0			
	समस्त	13.3	84.6	2.1	635.802	2	.000

निर्वचन : सारणी 3 (ग) का अवलोकन करने पर प्रकट होने वाले तथ्य इस प्रकार हैं –
अधिकांश अध्यापकों का शैक्षिक भ्रमण के बारे में मानना है कि इस के द्वारा बच्चों का ज्ञान तथा आत्मविश्वास बढ़ता है। समस्त अध्यापकों की इसके पक्ष में प्रतिशत 84.6 है। यद्यपि शहरी तथा ओबीसी अध्यापकों में यह प्रतिशत 86.1 तथा 87.2 हैं। ये प्रतिशत संख्यिकी की दृष्टि में सार्थक नहीं है।

3 (घ) स्काउट गाइड कार्यक्रम के बारे में अध्यापकों की तत्परता :

स्काउट गाईड कार्यक्रम के बारे में तत्परता का अध्ययन करने के लिए हमारे उपकरण का कथन तथा उस पर प्रतिक्रियाएँ इस प्रकार हैं।

19 स्काउट गाईड कार्यक्रम तब ही सफल हो सकता है जब कि सभी शिक्षकों की भागीदारी हो:

1.	पूर्ण सहमत	
2.	टसहमत	
3.	यह कार्यक्रम ही बेकार हैं।	

इस कथन पर अध्यापकों के उत्तरों को सारणी 3 (घ) में प्रस्तुत किया गया हैं।

सारणी 3 (घ)
स्काउट गाईड कार्यक्रमों के बारे में अध्यापकों की तत्परता

कथन संख्या	वर्ग	प्रत्यूत्तर श्रेणियों पर उत्तर प्रतिशत			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी. एफ	सार्थकता
19	पुरुष	86.6	11.5	1.8	3.741	2	0.154 सा0 नं0
	महिला	90.8	7.1	2.0			
	ग्रामीण	85.5	12.8	1.7	0.165	2	0.921 सा0 नं0
	शहरी	85.3	12.7	2.0			
	सामान्य	86.8	10.9	2.3	2.437	4	0.656 सा0 नं0
	टोबीसी	82.9	15.4	1.7			
	एससीएसटी	83.3	15.2	1.4			
	समस्त	85.0	13.1	1.9	644.42	2	.000

निर्वचन : सारणी 3 (घ) का अवलोकन करने पर प्रकट होने वाले तथ्य इस प्रकार हैं –
85 प्रतिशत अध्यापक मानते है कि स्काडट गाईड कार्यक्रम में सभी अध्यापकों का सहयोग आवश्यक है। उच्चतम प्रतिशत महिला अध्यापकों की 90.8 है जबकि निम्नतम प्रतिशत ओबीसी अध्यापकों की 82.9 हैं। लेकिन विभिन्न वर्गो में काई वर्ग सार्थक नहीं है । 85 प्रतिशत अध्यापकों का मानना है कि स्काउट गाईड कार्यक्रमों में सभी अध्यापकों की भागीदारी सुनिश्चित हो। जबकि इसे बेकार कार्यक्रम केवल 1.9 प्रतिशत अध्यापक मानते हैं।

4 शिक्षा में पारदर्शिता के प्रति अध्यापकों की तत्परता :

शिक्षा में पारदर्शिता के प्रति अध्यापकों की तत्परता की जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारे उपकरण में तीन कथन हैं। इन तीन कथनों 16, 17 तथा 18 पर अध्यापकों की तत्परता इस प्रकार हैं–

1 बच्चों को परीक्षा की मूल्यांकन की गई सभी कापियां दिखाई जानी चाहिए इस सम्बन्ध में प्रस्तुत कथन इस प्रकार हैं।

16 बच्चों को परीक्षा की मूल्यांकन की गई सभी कापियां दिखाई जानी चाहिए :

1.	यह पारदर्शिता का अच्छा तरीका हैं।
2.	यह अध्यापकों के प्रति अन्याय होगा।
3.	इससे कोई लाभ नहीं होगा।

इस कथन पर अध्यापकों के उत्तरों को सारणी 4 (क) में प्रस्तुत किया गया हैं।

सारणी 4 (क)
बच्चों को परीक्षा की मूल्यांकन की गई सभी कापियां दिखाई जानी चाहिए''
कथन पर अध्यापकों के प्रत्यूत्तर–

कथन संख्या	वर्ग	प्रत्यूत्तर श्रेणियों पर अध्यापकों के उत्तर			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी. एफ	सार्थकता
16	पुरुष	94.1	2.4	3.6	0.769	2	0.681 सा. न.
	महिला	95.9	1.0	3.1			
	ग्रामीण	95.4	2.3	2.3	1.089	2	0.580 सा. न.
	शहरी	93.9	2.0	4.0			
	सामान्य	94.0	2.3	3.8	1.531	4	0.820 सा. न.
	टोबीसी	95.7	0.9	3.4			
	एससीएसटी	94.2	2.9	2.9			
	समस्त	94.4	2.1	3.5	883.773	2	.000

निर्वचन :

समस्त अध्यापकों मे से 94.4 प्रतिशत अध्यापक परीक्षा की मूल्यांकन की गई कापियों को बच्चों को दिखाने को पारदर्शिता का अच्छा तरीका समझते हैं। ओबीसी में यह प्रतिशत 95.7 ग्रामीण अध्यापकों में 95.4 तथा महिलाओं में यह प्रतिशत 95.9 हैं।

4 (ख) प्रत्येक विद्यालय में शिकायत पेटी लगानी चाहिए जिसे उच्च अधिकारी खोलें।

इस सम्बन्ध में कथन तथा उसकी प्रत्यूत्तर श्रेणियां इस प्रकार हैं।

17 प्रत्येक विद्यालय में शिकायत पेटी लगानी अनिवार्य हो जिसे उच्चाधिकारी खोलें :

1.	यह बेकार का काम हैं।
2.	इससे अनुशासनहीनता बढ़ेगी।
3.	छात्रहित में लाभकारी हैं

इस कथन पर अध्यापकों के उत्तरों को सारणी 4 (ख) में प्रस्तुत किया गया हैं।

निर्वचन : सारणी 4 (ख) से प्रकट होने वाले निष्कर्ष इस प्रकार हैं– शिकायत पेटी को छात्रहित में उपयोगी मानने वाले अध्यापकों की प्रतिशत 78.5 हैं। महिलाएं इसे 84.7 प्रतिशत, ओबीसी तथा एससीएसटी इसे क्रमशः 82.9 तथा 82.6 प्रतिशत उपयोगी मान रहें हैं।

सारणी 4 (ख)
प्रत्येक विद्यालय में शिकायत पेटी लगानी अवश्यक हो जिसे उच्चाधिकारी खोलें, कथन पर अध्यापकों के प्रत्यूत्तर

कथन संख्या	वर्ग	प्रत्यूत्तर श्रेणियों पर उत्तरों का प्रतिशत			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी. एफ	सार्थकता
17	पुरुष	5.2	17.8	77.0	1.078	2	0.583 सा. नं.
	महिला	3.1	12.2	84.7			
	ग्रामीण	5.2	19.0	75.9	2.463	2	0.292 सा. नं.
	शहरी	4.6	15.6	79.8			
	सामान्य	6.8	18.9	74.3	7.368	4	0.118 सा. नं.
	ओबीसी	3.4	13.7	82.9			
	एससीएसटी	2.2	15.2	82.6			
	समस्त	4.8	16.7	78.5	486.31	2	.000

निर्वचन :

शिकायत पेटी को छात्रहित में उपयोगी मानने वाले अध्यापकों की प्रतिशत 78.5 हैं। महिलाएं इसे 84.7 प्रतिशत, ओबीसी तथा एससीएसटी इसे क्रमशः 82.9 तथा 82.6 प्रतिशत उपयोगी मान रहें हैं। बेकार का काम मानने वाले अध्यापक 4.8 प्रतिशत हैं। अध्यापकों के विभिन्न वर्गो में सार्थक स्तर का अन्तर नहीं हैं।

4 (ग) छात्र कल्याण कोष का हिसाब सार्वजनिक करने के सम्बन्ध में अध्यापकों के विचार :

विद्यालय कार्यों में पारदर्शिता लाने के लिए छात्र कल्याण कोष का हिसाब सार्वजनिक करने के लिए जो कथन हमारे उपकरण में सम्मिलित किया गया है वह इस प्रकार हैं।

18 छात्र कल्याण कोष (पी.डब्ल्यू.एफ.) का हिसाब–किताब सार्वजनिक करने के लिए नोटिस बोर्ड पर लगाया जाए :–

1.	पारदर्शिता के लिए आवश्यक है।
2.	यह कार्य निरर्थक रहेगा।
3.	कोई टिप्पणी नहीं करना चाहते।

इस कथन पर अध्यापकों के प्रत्यूत्तरों को सारणी 4 (ग) में प्रस्तुत किया गया हैं।

सारणी 4 (ग)
छात्र कल्याण कोष को सार्वजनिक करने के सम्बन्ध में अध्यापकों के प्रत्यूत्तर–

कथन संख्या	वर्ग	प्रत्यूत्तर श्रेणियों पर उत्तरों की प्रतिशत			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी. एफ	सार्थकता
18	पुरुष	85.5	7.1	7.3	2.224	2	0.329 सा. नं.
	महिला	89.8	3.1	7.1			
	ग्रामीण	89.7	4.6	5.7	2.463	2	0.292 सा. नं.
	शहरी	84.7	7.2	8.1			
	सामान्य	86.0	6.0	7.9	0.771	4	0.942 सा. नं.
	ओबीसी	85.5	7.7	6.8			

	एससीएसटी	87.7	5.8	6.5			
	समस्त	86.3	6.3	7.3	658.682	2	.000

निर्वचन :
समस्त अध्यापकों का 86.3 प्रतिशत अध्यापक इसे आवश्यक मानते हैं। ग्रामीण तथा महिला, अध्यापकों में यह प्रतिशत 89.7 तथा 89.8 है। समस्त अध्यापकों में 86.3 प्रतिशत अध्यापक छात्र कल्याण कोष के हिसाब को सार्वजनिक करने के लिए उसे नोटिस बोर्ड पर लगाना उचित मानते हैं । इस कार्य को निरर्थक मानने वाले अध्यापक 6.3 तथा शेष 7.3 अपना अभिमत टिप्पणी न करने का दे रहे हैं।

5 बच्चों के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में अध्यापकों की तत्परता:

बाल अधिकारों के प्रति अध्यापकों की तत्परता का अध्ययन करने में बच्चों के स्वास्थ्य से सम्बन्धित पाँच कथन हमारी मापनी में सम्मिलित है। इन कथनों की क्रम संख्या 1, 2, 3, 4 तथा 5 हैं। इन कथनों पर अध्यापकों की तत्परता का अध्ययन आगे प्रस्तुत किया जा रहा हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी कथनों में से क्रम संख्या 1 पर सम्मिलित कथन इस प्रकार हैं।

1 विद्यालयों में स्वास्थ्य अभिलेख रखना तथा वर्ष में दो बार स्वास्थ्य सम्बन्धी जाँच कराना लाभकर हैं।

1.	यह कार्य बच्चों के हित में है। अतः आवश्यक हैं।
2.	इससे शिक्षकों का कार्यभार बढ़ेगा।
3.	इससे शिक्षण कार्य में बाधा आयेगी।

इस कथन पर अध्यापकों द्वारा प्रदत्त मतों को सारणी 4.5.5 (क) में प्रस्तुत किया गया हैं।

सारणी 5 (क)
स्वास्थ्य अभिलेख के सम्बन्ध में अध्यापकों के प्रत्यूत्तर –

कथन	अध्यापकों के वर्ग	विकल्पों पर अध्यापकों के उत्तरों की प्रतिशत			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी. एफ	सार्थकता
1	पुरुष	96.7	2.6	0.7	3.341	2	0.188 सा. न.
	महिला	100.0	0	0			
	ग्रामीण	97.9	0.6	1.7	8.904	2	0.012 सा.
	शहरी	97.1	2.9	0.0			
	सामान्य	95.5	4.2	0.4	11.164	4	0.024 सा.
	ओबीसी	99.1	0	0.9			
	एससीएसटी	99.3	0	0.7			
	समस्त	97.3	2.1	0.6	968.148	2	.000

निर्वचन : सारणी 5 (क) का अवलोकन करने पर प्रकट होने वाले निष्कर्ष इस प्रकार हैं–
स्वास्थ्य अभिलेख को बच्चों के हित में तथा आवश्यक मानने वाले अध्यापकों की प्रतिशत 97.3 है। महिलाएं शत प्रतिशत, एससीएसटी के अध्यापक 99.3 ओबीसी के अध्यापक 99.1 प्रतिशत इसे आवश्यक मानते हैं।

अति उच्च प्रतिशत (97.3) में अध्यापक मानते हैं कि विद्यालयों को स्वास्थ्य अभिलेख रखना आवयश्क हैं। केवल 0.6 प्रतिशत इससे शिक्षण कार्य में बाधा आयेगी ऐसा मानते हैं।

5 (ख) पल्स पोलियो के सम्बन्ध में हमारी मापनी में जो कथन है वह इस प्रकार हैं–

2. पल्स पोलियो को पूरी सफलता नहीं मिल पायी हैं। असफलता का प्रमुख कारण हैं :

1.	दवाई के प्रयोग के सम्बन्ध में जानकारी का अभाव।
2.	सब बच्चों को दवाई न पिला पाना।
3.	सरकार की निष्क्रियता।

इस कथन पर अध्यापकों के उत्तरों की सारणी 5 (ख) में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 5 (ख)
पल्स पोलियो की असफलता के कारणों पर अध्यापकों के अभिमत

कथन	अध्यापकों के वर्ग	विकल्पों पर अध्यापकों के उत्तरों का प्रतिशत			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी. एफ	सार्थकता
1	पुरुष	34.4	63.3	2.4	13.845	2	0.001

	महिला	15.3	80.6	4.1			सा.
	ग्रामीण	36.8	59.2	4.0	6.91	2	0.032
	शहरी	27.7	70.2	2.0			सा.
	सामान्य	33.2	63.4	3.4	7.722	4	0.102
	ओबीसी	21.4	76.1	2.3			सा. नं.
	एससीएसटी	34.1	64.5	1.4			
	समस्त	30.8	66.5	2.7	326.227	2	.000

निर्वचन : सारणी 5 (ख) अवलोकन करने पर प्रकट होने वाले तथ्य इस प्रकार हैं–

अध्यापक मानते हैं कि पोलियों की दवाई सब बच्चों को न पिला पाने के कारण पल्स पोलियो अभियान असफल रहा है। ऐसी मान्यता 66.5 प्रतिशत अध्यापकों की हैं। सरकार का दायित्व है कि वह पोलियो वेक्सीन के सही उपयोग सम्बन्धी जानकारी वेक्सीनेटरों को विस्तार से समझाएं। जनजागरूकता के द्वारा पोलियो वेक्सीन का प्रचार पर्याप्त रूप से किया जा रहा हैं।

5 (ग) कुपोषित बच्चों की संख्या के संदर्भ में हमारी मापनी में प्रश्न संख्या चार प्रस्तुत किया गया हैं। यह प्रश्न इस प्रकार हैं।

4. विश्व के समस्त कुपोषित बच्चों में से लगभग आधे बच्चे हैः

1.	हमारे देश में।	
2.	भारत बांग्लादेश और पाकिस्तान में।	
3.	जानकारी नहीं।	

इस प्रश्न पर अध्यापकों के उत्तरों की सारणी 5 (ग) में प्रस्तुत किया गया हैं।

सारणी 5 (ग)
विश्व में कुपोषित बच्चों की संख्या के सम्बन्ध में अध्यापकों के उत्तर

कथन	अध्यापकों के वर्ग	अध्यापकों के उत्तर श्रेणियों में प्रतिशत			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी. एफ	सार्थकता
4	पुरुष	17.3	68.0	14.7	1.599	2	0.449
	महिला	13.3	74.5	12.2			सा. न.
	ग्रामीण	18.4	67.2	14.4	0.695	2	0.706
	शहरी	15.6	70.2	14.2			सा. न.
	सामान्य	15.1	70.6	14.3	3.79	4	0.435
	ओबीसी	14.5	68.4	17.1			सा. न.
	एससीएसटी	21.0	67.4	11.6			
	समस्त	16.5	69.2	14.2	311.26	2	.000

निर्वचन : सारणी 5 (ग) अवलोकन करने पर विदित होता हैं कि –

समस्त अध्यापकों में से 14.2 प्रतिशत अध्यापकों ने स्वीकार किया है कि उन्हें जानकारी नहीं हैं।

अध्यापकों में से 69.2 प्रतिशत को यह जानकारी है कि विश्व के लगभग आधे कुपोषित बच्चे भारत, पाकिस्तान तथा बांग्लादेश के हैं।

5 (घ) हमारे देश में कुपोषित बच्चों की संख्या के बारे में उपकरण में जो प्रश्न सम्मिलित है वह इस प्रकार हैं –

5. हमारे देश में 6 वर्ष तक की आयु के कुपोषित बच्चों का प्रतिशत है :

1.	लगभग 56 प्रतिशत	
2.	लगभग 66 प्रतिशत	
3.	लगभग 77 प्रतिशत	

इस उत्तर के रूप में आयी प्रतिशत को सारणी 5 (घ) में प्रस्तुत किया गया हैं।

सारणी 5 (घ)
हमारे देश में कुपोषित बच्चों की प्रतिशत पर अध्यापकों के प्रत्यूत्तर

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियों पर अध्यापकों की प्रतिशत उत्तर			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी.एफ.	स्तर
15	पुरुष	65.9	23.0	11.1	6.536	2	0.038
	महिला	78.6	12.2	9.2			सा.
	ग्रामीण	64.4	24.4	10.9	2.344	2	0.310

	शहरी	70.2	19.1	10.7			सा.न.
	सामान्य	66.8	23.8	9.4	6.038	4	0.196
	ओ.बी.सी.	72.6	18.8	8.5			सा.न.
	एस.सी.एस.टी.	67.4	17.4	15.4			
	समस्त	68.3	21.0	10.8	289.102	2	0.000

निर्वचन : सारणी 5 (घ) के अवलोकन से विदित होता है कि –
इस कथन का सही उत्तर श्रेणी 2 में दी गई प्रतिशत राष्ट्रीय बाल अधिकार आयोग द्वारा प्रकाशित प्रकाशन ''इन फोकस के वोल्यूम–1 संख्या–1'' पर आधारित है । केवल 21 प्रतिशत अध्यापकों को यह जानकारी है कि 6 वर्ष से कम आयु के भारत के लगभग 66 प्रतिशत बच्चे कुपोषण ग्रस्त हैं।

6 बाल अधिकारों की जानकारी के लिए अध्यापक प्रशिक्षण :इस क्षेत्र में हमारे उपकरण में तीन परिस्थतियों पर अध्यापकों को अपनी तत्परता व्यक्त करनी है । ये कथन है 8, 9 तथा 10। इन कथनों पर अध्यापकों के प्रत्यूत्तरों को आगे प्रस्तुत किया जा रहा है । इस क्षेत्र का पहला कथन है

8. बाल विकास मनोविज्ञान तथा बाल अधिकार के सम्बन्ध में यदि आपको नि:शुल्क पत्राचार प्रशिक्षण दिया जाए तो आप उसमें प्रवेश लेने के लिए उत्सुक रहेंगे ।

1.	उत्सुक हैं ।
2.	हम पहले से ही जानकार हैं।
3.	यह सब कुछ बेकार की बातें हैं।

इस परिस्थिति पर अध्यापकों के द्वारा व्यक्त उत्तरों को सारणी 6 (क) में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी – 6 (क)
बाल विकास मनोविज्ञान तथा बालाधिकार के नि:शुल्क पत्राचार प्रशिक्षण पर अध्यापकों द्वारा दिए गए उत्तर

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियों पर अध्यापकों की प्रतिशत उत्तर			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी.एफ.	स्तर
8	पुरुष	85.3	12.1	2.6	22.529	2	0.001
	महिला	69.4	30.6	0.0			सार्थक
	ग्रामीण	87.4	10.3	2.3	5.447	2	0.066
	शहरी	79.8	18.2	2.0			सा.न.
	सामान्य	81.9	15.8	2.3	5.713	4	0.229
	ओ.बी.सी.	80.3	15.4	4.3			सा.न.
	एस.सी.एस.टी.	84.8	15.2	0			
	समस्त	82.3	15.6	2.1	558.511	2	0.000

निर्वचन : सारणी 6 (क) का अवलोकन करने पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं–
समस्त अध्यापकों में से 82.3 प्रतिशत अध्यापक प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए उत्सुक हैं । अध्यापक अति उच्च प्रतिशत 82.3 में बाल विकास मनोविज्ञान तथा बाल अधिकार का नि:शुल्क प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए उत्सुक है । ग्रामीण तथा पुरुष अध्यापक उच्च प्रतिशत में प्रशिक्षण प्राप्त करना चाह रहें हैं।

6 (ख) हमारे उपकरण में प्रशिक्षण सम्बन्धी दूसरा कथन है –
क) बाल विकास मनोविज्ञान तथा बाल अधिकार का पत्राचार प्रशिक्षण कार्यक्रम कितनी समयावधि का होना ठीक रहेगा ।

	वर्षीय कार्यक्रम
	वर्षीय कार्यक्रम
	श्यकता ही नहीं हैं।

इस कथन पर अध्यापकों के प्राप्त अभिमतो को सारणी 6 (ख) में प्रस्तुत किया गया है।
निर्वचन : सारणी .6 (ख) का अवलोकन करने पर प्रकट होने वाले तथ्य इस प्रकार है । अध्यापक 83.3 जैसी उच्च प्रतिशत में एक वर्षीय पाठ्यक्रम की अभिशंषा कर रहे हैं । केवल 14.8 प्रतिशत अध्यापक दो वर्षीय पाठ्यक्रम के संचालन के पक्षधर हैं। लिंग तथा परिवेश के आधार पर अध्यापकों के मतों में विभेद है। 83 प्रतिशत अध्यापक एक वर्ष के प्रशिक्षण कार्यक्रम को उचित मान रहे हैं ।

सारणी – 6 (ख)
बाल विकास मनोविज्ञान तथा बालाधिकार के पाठ्यक्रम का समयावधि पर अध्यापकों की तत्परता

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियों पर अध्यापकों की प्रतिशत उत्तर	काई वर्ग

		1	2	3	मूल्य	डी.एफ.	स्तर
	पुरुष	81.10	17.3	1.7	11.529	2	0.003
	महिला	92.9	4.1	3.1			सा.
	ग्रामीण	77.6	20.1	2.3	6.181	2	0.045
	शहरी	86.1	12.1	1.7			सा.
	सामान्य	83.8	14.3	1.9	2.588	4	0.629
	ओ.बी.सी.	82.1	14.5	3.4			सा. न.
	एस.सी.एस.टी.	83.3	15.9	0.7			
	समस्त	83.3	14.8	1.9	590.511	2	0.000

6 (ग) शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बाल विकास मनोविज्ञान तथा बाल अधिकार पाठ्यक्रम के स्वरूप पर अध्यापकों के अभिमत :

इस सम्बन्ध में हमारे उपकरण में जो प्रश्न है। वह इस प्रकार है –

10. शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में बाल विकास तथा बाल अधिकार पाठ्यक्रम को लागू करने में आपकी सलाह के अनुसार :

1.	यह पाठ्यक्रम आवश्यक विषय के रूप में होना चाहिए ।
2.	केवल इच्छुक प्रशिक्षणार्थी के लिए ही यह विषय हो ।
3.	आवश्यकता ही नहीं हैं।

इस कथन पर अध्यापकों के प्राप्त अभिमतो को सारणी 6 (ग) में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी – 6 (ग)
शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बाल विकास तथा बाल अधिकार विषय के स्वरूप पर अध्यापकों के प्रत्युत्तर ।

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियों पर अध्यापकों के प्रतिशत उत्तर			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी.एफ.	सार्थकता
8	पुरुष	82.9	15.2	1.9	14.573	2	0.001
	महिला	67.3	31.6	1.0			सा.
	ग्रामीण	86.8	12.1	1.1			0.023
	शहरी	76.6	21.4	2.0			सा.
	सामान्य	78.5	19.2	2.3	2.080	4	0.72
	ओ.बी.सी.	79.5	18.8	1.7			सा.न.
	एस.सी.एस.टी.	83.3	15.9	0.7			
	समस्त	80.0	18.3	1.7	530.420	2	0.000

निर्वचन :

शिक्षण प्रशिक्षण में अध्यापक बाल विकास मनोविज्ञान तथा बाल अधिकार की पाठ्यचर्या को सम्मिलित करने को 80 प्रतिशत अध्यापक अपना समर्थन दे रहे हैं ।

7 आत्मविश्वास सम्बन्धी कथन पर अध्यापकों की तत्परता

हमारे उपकरण में आत्मविश्वास के विकास के लिए केवल एक ही कथन सम्मिलित है वह कथन है –

7 बच्चों को प्रत्येक कार्य में सफलता की अनुभूति कराना आवश्यक है। इससे उनमें आत्मविश्वास का विकास होता है'' आपकी दृष्टि में यह कथन है:

1.	यह परीक्षित सत्य है।
2.	यह सत्य नहीं है। क्योंकि सफलता तथा आत्मविश्वास में कोई सम्बन्ध नहीं है।
3.	कहा नहीं जा सकता है।

इस कथन पर अध्यापकों से प्राप्त प्रत्युत्तरों को सारणी 7 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी – 7
सफलता की अनुभूति का आत्मविश्वास से सम्बन्ध

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियों पर अध्यापकों के प्रतिशत उत्तर			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी.एफ.	सार्थकता
7	पुरुष	90.78	5.0	4.3	4.543	2	0.103
	महिला	95.9	4.1	0			सा.न.
	ग्रामीण	92.5	3.4	4.0	1.261	2	0.532
	शहरी	91.3	5.5	3.2			सा.न.

	सामान्य	92.5	3.8	3.8	4.152	4	0.386 सा.न.
	ओ.बी.सी.	89.7	5.1	5.1			
	एस.सी.एस.टी.	92.0	6.5	1.4			
	समस्त	91.7	4.8	3.5	792.966	2	0.000

निर्वचन : सारणी 7 का अवलोकन करने पर निम्नलिखित तथ्य प्रकट हो रहें है।
सफलता की अनुभूति कराने से बच्चों में आत्मविश्वास का विकास होता है। ऐसा 91.7 अध्यापक मानते है। सफलता का आत्मविश्वास से सम्बन्ध न मानने वाले अध्यापक 4.8 प्रतिशत है। जबकि कहा नहीं जा सकता ऐसा उत्तर देने वाले अध्यापकों की प्रतिशत 3.5 है।

8 अध्यापकों को पुरस्कार

प्रत्येक विषय में प्रत्येक विद्यालय में अच्छा परिणाम देने वाले अध्यापकों का अभिनन्दन किया जाए उन्हें पुरस्कार दिया जाए इस सम्बन्ध में मापनी में केवल एक कथन सम्मिलित है। वह इस प्रकार है–
प्रत्येक विद्यालय में प्रत्येक विषय के अच्छा परिणाम देने वाले प्रत्येक विषय के अध्यापकों का अभिनन्दन किया जाए तथा उन्हें पुरस्कार दिया जाए।

1.	इससे अध्यापकों में पारस्परिक द्वेष बढ़ेगा।
2.	इससे अध्यापकों को प्रोत्साहन मिलेगा।
3.	यह तरीका ठीक नहीं है।

इस कथन पर अध्यापकों के प्राप्त उत्तरों को सारणी 8 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी – 8
अच्छा परिणाम देने वाले अध्यापकों को पुरस्कार देने के सम्बन्ध में अध्यापकों के प्रत्यूत्तर

कथन	अध्यापकों के वर्ग	उत्तर श्रेणियों पर अध्यापकों की प्रतिशत उत्तर			काई वर्ग		
		1	2	3	मूल्य	डी.एफ.	सार्थकता
20	पुरुष	4.7	91.2	4.0	1.679	2	0.432 सा.न.
	महिला	2.0	94.9	3.1			
	ग्रामीण	2.3	94.3	3.4	2.569	2	0.277 सा.न.
	शहरी	5.2	90.8	4.0			
	सामान्य	3.8	92.1	4.2	5.418	4	0.247 सा.न.
	ओ.बी.सी.	1.7	94.0	4.3			
	एस.सी.एस.टी.	7.2	89.9	3.8			
	समस्त	4.2	91.9	3.8	808.511	2	0.000

निर्वचन : प्रत्येक विद्यालय के प्रत्येक विषय के प्रत्येक अध्यापक को अच्छा परिणाम देने पर पुरस्कृत किया जाए, उनका अभिनन्दन किया जाए, इसे उचित मानने वाले अध्यापक की प्रतिशत 91.9 है। 4.2 प्रतिशत अध्यापक मानते है कि इससे अध्यापकों में पारस्परिक द्वेष बढ़ेगा जबकि इसे उचित न मानने वाले 3.8 प्रतिशत अध्यापक हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Balakrishanan, R. (1994): The Sociological Context of Girls' Schooling: Micro Perspectives from Delhi Slums in Social Action, 44 (July-September) 1994.
2. Balasbramarian, R. (Ed.) 1992 : Tolerance in Indian Culture New Delhi. Indian Philosophical Research.
3. Barua, B. (2003) : Jour. of All India Association for edu. Research Vol. 15, 3-4.
4. Basu , D.D. (2003) : Human Right in constitutional Law New Delhi Law Publishers, II Edition.
5. Bee, H. (1978) : The Developing Child, New York : Harper & Row Publishers.
6. Best, John W. (1986) : Research in Education. New Delhi: Prentice Hall.
7. Beckett,Chris(2007): Child Protection-an Introduction. New Delhi SAGE Publications. www.sagepublication.com.
8. Bhagia, N.M. (1980) : Promoting Attitudes and Values through Environmental Studies. Naya Shikshak, Rajasthan Bikaner, 23 (2), 9-21.
9. Bhargava, R. (1998): Secularism and its cities, New Delhi, Oxford University, Press.
10. Bhaskara, R.D. (1997) : Scientific attitude, New Delhi, Discovery Publishing House.
11. Education, 25-26(4-1), 39-43.
12. Black, M. (1994) : Children First: The Story of UNICEF, Past and Present, Oxford University Press.

13. Centre for Communication and Development (2007): DCWC Research Bulletin Oct.-DEC 2007
14. Committee for legal aid to poor (2006): DCWC Research Bulletin Apr-Ju.2007
15. CRY(2001):The Indian Child,2001.Child Relief and You,Mumbai,189/A Sane Guruji Marg Anand Estate.(www.cry.org.)
16. CRIN: Child Right Information Network c/o Save The Child.1 Sant John, Lane London ECIMAAR London.U.K. www.crin.org
17. Dhanda, V. & Nath, M. (1994) : Prachi Jour. of Psycho-Cultural Dimentions vol. 10C 1 , 1981
18. Diwan, Rasmi (1993): Sixth Survey of Edu. Research NCERT.
19. Dow, U. (1998): Birth Registration: The First Right IN UNICEF Progress of Nation 1998. New York. UNICEF.
20. Durkheim, E. (1953) : Moral Education, New York : Free Press of Glencoe.
21. Edword, Landon (1991) : Encyclopedia of Human Rights, London Francis Inc.
22. Ebrahim,G. J. (1985) :Social and Community Pediatrics in developing Countries Caring for the Rural and Urban Poor Macmillan.
23. Ehlers, H. (1977) : Crucial Issues in Education, New York : Holt, Rinehart and Winston.
24. Gangani Rajesh (2006): Status of Children in India .New Delhi Cyber Tech Publication.
25. Garret, E. Henry (2004) : Statistics in Psychology & Education. New Delhi, Paragon International Publishers, Dariyaganj.
26. Geetha,C.V& Bhaskar,G. (1993) :Education for human rights and democracy. Simla,Indian Institute of Advance Studies, Workshop.
27. Giri,K (1995):Safe Motherhood Strategies in the Developing Countries in H M Wallace, Giri, K and Serrano, C V (eds) Health Care of Women and Children in Developing Countries, Oakland C A: Third Party Publishing Company .
28. Goldbrick, D.M. (1991) : Human Rights, its Role in development of International conversant on Civil & Political Rights. Oxford Uni.